**C.B.S.E**

**विषय : हिन्दी 'अ'**

**कक्षा : 9**

**निर्धारित समय : 3 घंटे** **अधिकतम अंक : 80**

**सामान्य निर्देश:**

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।
4) एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5) दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6) तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

## खंड – क

## [अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (2×4=8) (1×2=2) [10]

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है। मनुष्य का समाज पर जो प्रभाव पड़ता है, वह कुछ अंश में उसकी उसकी पोशाक और चाल-ढाल पर पर निर्भर रहता है, किंतु विष भरे कनकघटों की संसार में कमी नहीं है। यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाव से पुष्ट नहीं होता है, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। कटुभाषी लोगों से लोग ह्रदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए

विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता। भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबरदस्त होता है।

1. किन गुणों के कारण मनुष्य आदर का भाजन बनता है?

   उत्तर : वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का भाजन बनाती है। मनुष्य का समाज पर जो असर पड़ता है वह कुछ अंश में उसकी उसकी पोशाक और चाल-ढाल पर पर निर्भर रहता है। मधुर भाषी होने के साथ उसकी कथनी और करनी में भी समानता उसे आदर का पात्र बनाती है।

2. मधुर भाषी के लिए क्या आवश्यक है?

   उत्तर : मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है।

3. सामाजिक व्यवहार के लिए क्या आवश्यक है?

   उत्तर : सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है। और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता।

4. भाषा की सार्थकता किसमें है?

   उत्तर : भाषा की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल सके। जब बुरे वचन आदमी को रुष्ट कर सकते हैं तो मधुर वचन दूसरे को प्रसन्न भी कर सकते हैं। शब्दों का जादू बड़ा जबरदस्त होता है।

5. उपर्युक्त गद्यांश से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश हमें जीवन में वार्तालाप का महत्त्व, कब कितना बोलना और मधुर वचन की शिक्षा देती है।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'मधुर बोली' है।

## खंड - ख

## [व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: [1]

ठंडक, बालिका

उत्तर : अक, इका

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: [1]

सहकार, पुरातत्व

उत्तर : सह, पुरा

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: [1]

समकालीन, सुशिक्षित

उत्तर : सम+कालीन, सु+शिक्षित

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए: [1]

कलमदान, वृद्धा

उत्तर : कलम+दान, वृद्ध+आ

ड़) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। [2]

- भलामानस
- त्रिवेणी

| समस्त पद | विग्रह | समास |
|---|---|---|
| भलामानस | भला है जो मानस | कर्मधारय समास |
| त्रिवेणी | तीन नदियों का समूह | द्विगु समास |

च) निम्नलिखित विग्रहों का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए। [2]

- रात-रात ही रात में
- राजा की सभा

| विग्रह | समस्त पद | समास |
|---|---|---|
| रात-रात ही रात में | रातोंरात | अव्ययीभाव समास |
| राजा की सभा | राजसभा | तत्पुरुष समास |

छ) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: [4]

1. वाह! प्रसन्नता की बात है!

   उत्तर : विस्मयादिबोधक वाक्य

2. तुम्हारी यात्रा सफल हो

   उत्तर : इच्छार्थक वाक्य

3. मेरे लिए एक कप चाय लाना।

   उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

4. पता नहीं उसे अच्छे आम मिले होंगें या नहीं।

उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

ज) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: [4]

1. लघु तरणि हंसनी ही सुन्दर

   उत्तर : उपमा अलंकार

2. कल कानन कुंडल मोरपंखा

   उत्तर : अनुप्रास अलंकार

3. उसकाल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा।

   मानों हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा

   उत्तर : उत्प्रेक्षा अलंकार

4. तरणि के ही संग तरल तरंग में तरणि डूबी थी हमारी ताल में

   उत्तर : यमक अलंकार

## खंड - ग

## [पाठ्य पुस्तक और पूरक पुस्तक]

प्र. 3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [3×2=6]

दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी ने इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा!

नांद की तरफ आँखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया; पर दोनों ने पाँव न

उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाये तो मोती को गुस्सा काबू से बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाटकर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं तो दोनों पकड़ाई में न आते।

हीरा ने मूक-भाषा में कहा- भागना व्यर्थ है।'

मोती ने उत्तर दिया- 'तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी।'

'अबकी बड़ी मार पड़ेगी।'

'पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है तो मार से कहाँ तक बचेंगे?'

'गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है, दोनों के हाथों में लाठियाँ हैं।'

मोती बोला- 'कहो तो दिखा दूँ मजा मैं भी, लाठी लेकर आ रहा है।'

हीरा ने समझाया- 'नहीं भाई! खड़े हो जाओ।'

'मुझे मारेगा तो मैं एक-दो को गिरा दूँगा।'

'नहीं हमारी जाति का यह धर्म नहीं है।'

1. किसने नांद की तरफ आँख भी न उठाई?

   उत्तर : हीरा और मोती ने नांद की तरफ आँख भी न उठाई।

2. मोती को गुस्सा क्यों आया?

   उत्तर : उनके नए मालिक ने हीरा की नाक में खूब डंडे जमाए और अपने मित्र हीरा की ऐसी बुरी स्थिति देखकर मोती गुस्सा आ गया।

3. ‘नहीं ये हमारी जाति का धर्म नहीं’- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : यहाँ पर हीरा मोती के उदहारण द्वारा यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है कि दूसरे भले अपना धर्म क्यों न छोड़ दें हमें अपने धर्म को नहीं भूलना चाहिए।

प्र. 4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. प्रस्तुत यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर बताइए की उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

   उत्तर : 'ल्हासा की ओर' यात्रा-वृत्तान्त के आधार पर उस समय का तिब्बती समाज के बारे में पता चलता है कि-

   - तिब्बत के समाज में छुआछूत, जाति-पाँति आदि कुप्रथाएँ नहीं थी।
   - सारे प्रबंध की देखभाल कोई भिक्षु करता था। वह भिक्षु जागीर के लोगों में राजा के समान सम्मान पाता था।
   - उस समय तिब्बती की औरतें परदा नहीं करती थीं।
   - उस समय तिब्बती की जमीन जागीरदारों में बँटी थी जिसका ज्यादातर हिस्सा मठों के हाथ में होता था।

2. पाठ में एक जगह लेखक सोचता है कि 'फोटो खिंचाने कि अगर यह पोशाक है तो पहनने की कैसी होगी?' लेकिन अगले ही पल वह विचार बदलता है कि 'नहीं, इस आदमी की अलग-अलग पोशाकें नहीं होंगी।' आपके अनुसार इस संदर्भ में प्रेमचंद के बारे में लेखक के विचार बदलने की क्या वजहें हो सकती हैं?

   उत्तर : लोग प्रायः ऐसा करते हैं कि दैनिक जीवन में साधारण कपड़ों का प्रयोग करते हैं और विशेष अवसरों पर अच्छे कपड़ों का। लेखक ने पहले सोचा प्रेमचंद खास मौके पर इतने साधारण हैं तो साधारण मौकों पर ये इससे भी अधिक साधारण होते होंगे। परन्तु फिर लेखक को लगा कि प्रेमचंद का व्यक्तित्व दिखावे की दुनिया से बिलकुल भिन्न हैं क्योंकि वे जैसे भीतर हैं वैसे ही बाहर भी हैं।

3. "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।" - हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिये।

   उत्तर : हीरा के इस कथन से यह ज्ञात होता है कि उस समय समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी नहीं थी। समाज में स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था। उन्हें शारीरिक यातनाएँ दी जाती थीं। वे पुरुषों द्वारा शोषित थी। इसलिए समाज में ये नियम बनाए जाते थे कि उन्हें पुरुष समाज शारीरिक दंड न दे। हीरा और मोती भले इंसानों के प्रतीक हैं। इसलिए उनके कथन सभ्य समाज पर लागू होते हैं। असभ्य समाज में स्त्रियों की प्रताड़ना होती रहती थी। लेखक नारियों के सम्मान के पक्षधर थे। वे स्त्रियों तथा पुरुषों की समानता के पक्षधर थे।

4. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती क्यों थी?

   उत्तर : मैना अपने मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि वह मकान उसकी पैतृक धरोहर थी। उसी में मैना की बचपन की, पिता की, परिवार की यादें समाई हुई थीं। वह उसके जीवन का भी सहारा हो सकता था। इसलिए वह उसे बचाना चाहती थी।

5. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

   उत्तर : महादेवी की माता अच्छे संस्कार वाली महिला थीं। वे धार्मिक स्वभाव की महिला थीं। वे पूजा-पाठ किया करती थीं। वे ईश्वर में आस्था रखती थीं। सवेरे "कृपानिधान पंछी बन बोले" पद गाती थीं। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा के पद गाती थीं। वे लिखा भी करती थीं। लेखिका ने अपनी माँ के हिंदी-प्रेम और लेखन-गायन

के शौक का वर्णन किया है। उन्हें हिंदी तथा संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [2×3=6]

मेघ आये बड़े बन-ठन के, सँवर के।
आगे-आगे नाचती-गाती बयार चली
दरवाजे-खिड़कियाँ खुलने लगी गली-गली
पाहुन ज्यों आये हों गाँव में शहर के।
पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाये
आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाये
बाँकी चितवन उठा नदी, ठिठकी, घूँघट सरके।

1. मेघ गाँव में किस प्रकार आए?

   उत्तर : मेघ गाँव में शहरी मेहमान (दामाद) की तरह सज-धजकर आए।

2. मेघों के लिए 'बन-ठन के, सँवर के' आने की बात क्यों कही गई है?

   उत्तर : कवि ने मेघों में सजीवता लाने के लिए बन ठन की बात की है। जब हम किसी के घर बहुत दिनों के बाद जाते हैं तो बन सँवरकर जाते हैं ठीक उसी प्रकार मेघ भी बहुत दिनों बाद आए हैं क्योंकि उन्हें बनने सँवरने में देर हो गई थी।

3. 'बाँकी चितवन उठा, नदी ठिठकी, घूँघट सरकाए।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति का भाव यह है कि मेघ के आने का प्रभाव सभी पर पड़ा है। नदी ठिठककर कर जब ऊपर देखने की चेष्टा करती

है तो उसका घूँघट सरक जाता है और वह तिरछी नज़र से आए हुए आंगतुक को देखने लगती है।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. अलसी के लिए 'हठीली' विशेषण का प्रयोग क्यों किया गया है?

   उत्तर : अलसी के लिए 'हठीली' विशेषण का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि हठपूर्वक चने के पौधे के पास उग आई है। उसकी पतली देह बार–बार हवा के कारण झुक जाती है परन्तु वह फिर सीधे खड़े होकर चने के बीच नज़र आने लगती है।

2. आपने अपने शहर में बच्चों को कब-कब और कहाँ-कहाँ काम करते हुए देखा है?

   उत्तर : मैंने अपने शहर में बच्चों को चाय की दुकानों, होटलों, ढाबों में बर्तनों को साफ़ करते हुए, रास्ते पर लगे हुए ठेलों पर, घरों में काम करते घरेलू नौकरों के रूप में, छोटे निजी कार्यालयों में ऐसे अनेकों स्थानों पर, हर मौसम और रातों को देर तक काम करते हुए देखा है।

3. 'भाव स्पष्ट कीजिए-

   सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
   और वे सभी में एक साथ
   अपनी दहकती आँखों सहित विराजते हैं

   उत्तर : भाव- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव यह यह कि आज सामान्य जनमानस कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है। चारों ओर शोषणकर्ताओं ने अपना जाल बिछा रखा है। वे नए नए रूपों में हमारे सामने हमारा अंत करने के लिए तत्पर हैं। आज के इस समय में

यमराज का चेहरा भी बदल गया है और सभी जगह विराजमान भी है।

4. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर : कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रचलित विश्वास जैसे मंदिर, मस्जिद में जाकर पूजा अर्चना करना या नमाज पढ़ना अथवा योग, वैराग्य जैसी क्रियाएँ, पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा करना, आडम्बर युक्त भक्ति करके ईश्वर प्राप्ति की इच्छा करना इन सभी प्रचलित मान्यताओं का खंडन किया है।

5. कवयित्री ललद्य के अनुसार 'साहिब' से पहचान किस प्रकार हो सकती है?

उत्तर : कवयित्री ललद्य के अनुसार 'साहिब' से पहचान अपने भीतर को टटोलने से ही हो सकती है। कवयित्री के अनुसार साहिब अर्थात् ईश्वर तो हर जगह और हर प्राणी में वास करते हैं। वे हिंदू या मुसलमान में भेद नहीं करते। यदि आप अपने अंदर टटोलने की कोशिश करेंगे तो आपको ईश्वर मिल जाएँगे।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें। [3×2=6]

1. लेखिका की दादी के घर के माहौल का शब्द चित्र अंकित कीजिए।

उत्तर : लेखिका की दादी के घर का माहौल उस समयानुसार काफ़ी अलग था। दादी के घर में सब लोगों को अपनी मर्जीनुसार चलने की आज़ादी थी। घर में पुत्र-पुत्री में भेदभाव नहीं किया जाता था। स्वयं लेखिका की दादी ने अपनी बहू की पहली संतान बेटी ही माँगी थी। घर का माहौल भी काफ़ी धार्मिक,स्त्रियों को उचित सम्मान और साहित्यिक था।

2. 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस समस्या को उठाया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में बेटी के विवाह की, नारी को यथोचित सम्मान न मिलने की और समाज में व्याप्त दोहरे चरित्र वालों की समस्या को उठाया गया है। एकांकी में यह बताने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार माता-पिता को एक बेटी के विवाह में समस्याएँ आती है। विवाह के लिए उच्च शिक्षिता बेटी को भी कम-पढ़ी लिखी बताना पड़ता है।

## खंड - घ

## [लेखन]

प्र. 8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

विज्ञान के चमत्कार

आज का युग विज्ञान का युग है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने एक क्रांति पैदा कर दी है। विज्ञान का अर्थ है विशेष ज्ञान। मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं के लिए जो नए-नए आविष्कार किए हैं, वे सब विज्ञान की ही देन हैं। बिजली की खोज विज्ञान की एक बहुत बड़ी सिद्धि है। आज मनुष्य ने विज्ञान की सहायता से कई बड़े क्षेत्रों में सफलता पाई है जैसे कि चिकित्सा, सूचना क्रांति, अंतरिक्ष विज्ञान, यातायात आदि। यातायात- संबंधी वैज्ञानिक आविष्कारों ने संसार को एकदम छोटा कर दिया है। पहले जहाँ मानव को एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने में कई-कई वर्ष लग जाते थे वहीं आज मानव कई मीलों की दूरियों को हेलीकॉप्टर, हवाई जहाज, कार आदि द्वारा कम समय में पार कर लेता है।

आज रेडियो, टेलीविजन, डीवीडी प्लेयर, थ्रीडी सिनेमा, कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें विज्ञान द्वारा मनुष्य के मनोरंजन के लिए उपलब्ध

कराया है। मोबाइल, इंटरनेट, ईमेल्स, मोबाइल पर 3जी और इंटरनेट के माध्यम से फेसबुक, ट्विटर ने तो वाकई मनुष्य की जिंदगी को बदलकर ही रख दिया है। चिकित्सा और कृषि के क्षेत्रों में भी नई नई खोजों से बहुत लाभ हुआ है। विज्ञान द्वारा खाद व उपकरण, खाद्य पदार्थ, वाहन, वस्त्र आदि बनाने के असीमित कारखानें हैं।

विज्ञान के युद्ध-विषयक अस्त्र शस्त्रों के आविष्कारों ने देश की सभ्यता और संस्कृति को खतरे में डाल दिया है। परमाणु बम और हाइड्रोजन बम भी विज्ञान की ही देन हैं। यह बहुत ही विनाशक हैं। विज्ञान का उपयोग विनाश के लिए नहीं, विकास के लिए होना चाहिए।

## समय बड़ा बलवान

समय निरंतर प्रवाहित जलधारा के समान है जो आगे ही बढ़ता है बिना किसी की प्रतीक्षा या विश्राम के। जो व्यक्ति समय के साथ आगे बढ़ सकता है, वही जीवन में सफल होता है। समय, सफलता की कुंजी है।

समय का सदुपयोग ही व्यक्ति को विकास के मार्ग पर अग्रसर करता है। समय के महत्त्व को समझने वाला जीने की कला सीख लेता है। किसी ने समय की तुलना धन से की है। वास्तव में समय, धन से भी कही अधिक मूल्यवान है। धन तो आता-जाता रहता है, किंतु गया हुआ समय कभी लौटकर नहीं आता। जो समय की कद्र करता है, समय उसकी कद्र करता है। इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण है कि सही समय पर सही निर्णय लेने वाले व्यक्ति ही जीवन में सफल हुए हैं।

कबीर दास जी ने कहा है कि-

काल करै सो आज करए आज करै सो अब।
पल में परलै होयेगी, बहुरी करेगा कब।।

इसलिए मनुष्य अपने समय का विभाजन इस प्रकार करे ताकि उसके पास अध्ययन, व्यायाम, मनन-चिंतन आदि सभी कार्यों के लिए समय हो। समय

विभाजन कर उसका सदुपयोग करना सीख लें तो भविष्य सुविधाजनक और सुखमय हो जाता है।

बेरोज़गारी

देश में बेरोज़गारी का बढ़ना एक बहुत बड़ी समस्या है। यह समस्या नवयुवकों के लिए निराशा का विषय बनी हुई है। हमारी अधिकांश जनसंख्या बेरोजगारी के कारण भूखे पेट सोने और शिक्षा विहिन रहने के लिए विवश है। उसके पास किसी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला राष्ट्र है। जनसंख्या जितनी तेजी से विकास कर रही है, व्यक्तियों का आर्थिक स्तर और रोजगार के अवसर उतनी ही तेज गति से गिरते जा रहे है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह संभव नहीं है कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार दिलवा सके। भारत में बढ़ती बेरोजगारी को बड़े पैमाने पर व्याप्त अशिक्षा और भ्रष्टाचार समान रूप से बल प्रदान कर रहे हैं। औद्योगिकीकरण ने भी बेरोज़गारी के स्तर को हमारे देश में बढ़ाया है। बेरोज़गारी के कारण देश में आपराधिक वारदातों से संबंधित आंकड़ा भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। सरकार द्वारा इस समस्या को दूर करने के लिए अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

प्र. 9. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. आपका कई दिनों से काम नहीं कर रहा है इस की सूचना देते हुए और टेलीफोन को जल्द-से जल्द ठीक करने के लिए टेलीफोन विभाग को एक पत्र लिखिए।

   सेवा में,

   कार्यकारी इंजीनियर महोदय,

   टेलीफोन ऐक्सचेंज,

   माणिकपुर,

वसई।

विषय : टेलीफोन नं. 68xxxx88 को ठीक कराने हेतु पत्र।

महोदय,

मेरे यहाँ 68xxxx88 संख्या का टेलीफोन लगा हुआ है। मैं आपका ध्यान उपरोक्त टेलीफोन की ओर केन्द्रित करना चाहता हूँ जो पिछले 20 दिनों से खराब पड़ा है। इसके विषय में मैं कई बार शिकायतें लिखवा चुका हूँ एक उच्च अधिकारी से भी मेरी बात हुई थी, जिन्होंने दो-तीन दिनों से टेलीफोन ठीक कराने का आश्वासन दिया था परन्तु इस बात को एक सप्ताह हो चुका है, परन्तु अभी तक भी मेरा टेलीफोन खराब ही है।

अत: मेरा आपसे अनुरोध है कि आप व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर उसे ठीक कराने की व्यवस्था करें। मैं टेलीफोन खराब होने के कारण बहुत परेशान हूँ। यदि आप मेरा फोन जल्द ठीक कराने की कृपा करेंगे, तो मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

सधन्यवाद।

भवदीय,

शरत सक्सेना

मिलन महल

नवघर रोड

दिनाँक: 3 मार्च, 20 xx

2. दसवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? अपने भावी कार्यक्रम के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रिय अमर

नमस्ते।

कल ही परीक्षा का बोझ सिर से उतरा। मेरे सभी प्रश्नपत्र काफी अच्छे गए हैं और करीब 95 अंक प्राप्त होने की आशा है।

कल से यह सोच रहा हूँ कि दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद क्या करुँगा। मेरे पिताजी चाहते है मैं भी उनकी तरह वकालत करूँ। मैं इंजीनियर बनना चाहता हूँ। यह मेरा बचपन का सपना है।
मैं पिताजी को मनाने का प्रयास करूँगा। फिर भी इस विषय में तुम्हारी राय जानना चाहूँगा। तुम्हारे पत्र का इंतजार करुँगा। शेष कुशल है।
तुम्हारा मित्र
राज

प्र. 10. निम्नलिखित किसी एक विषय पर 25-30 शब्दों में संवाद लेखन करें। [5]

1. फूल बेचनेवाला और एक बूढे व्यक्ति के बीच हो रहा संवाद लिखिए।

    फूलवाला : क्या चाहिए दादाजी?

    बूढा व्यक्ति : मोगरे के फूल कैसे दिए?

    फूलवाला : यह 25रु. के है।

    बूढा व्यक्ति : इतने से! हमारे जमाने में तो 2 रु. के इससे ज्यादा मिलते थे। अब 5 रु. होगा।

    फूलवाला : नहीं, दादाजी आपका जमाना गया।

    बूढा व्यक्ति : हाँ, मैं भी समझता हूँ, तभी तो 5 रु. बोल रहा हूँ।

    फूलवाला : नहीं, 25रु. ही है। महंगाई बढ़ गई है।

    बूढा व्यक्ति : अच्छा। क्या करे दे दो।

    फूलवाला : और कुछ?

    बूढा व्यक्ति : नहीं बाबा इतनी महंगाई में एक ही बस है।

2. दो स्त्रियों के बीच पानी की समस्या को लेकर बातचीत पर संवाद लेखन लिखिए:

    राधिका : अरे! सोहन की माँ सुनती हो?

    मधु : हाँ बोलो।

राधिका : आज फिर पानी नहीं आया।

मधु : हाँ, यह तो रोज का ही रोना हो गया है।

राधिका : हम मोहल्ले को मिलकर नगरपालिका ऑफिस में शिकायत करनी चाहिए।

मधु : तुम सही कह रही हो।

राधिका : आज में सेक्रेटरी साहब से कहकर मीटिंग बुलवाती हूँ।

मधु : हाँ, सब मिलकर कुछ समाधान निकाल लेंगे।

राधिका : चलो बहन, फिर मैं सेक्रेटरी साहब से बात कर आती हूँ।

मधु : अच्छा, ठीक है।